श्री रत्नप्रभाकर ज्ञान पुष्पमाला पुष्प नं० १४ ।

* श्रीरत्नप्रभ सूरिपादपद्मेभ्योनमः

उपकेश वंश ।

(ओसवाल जाति का संक्षिप्त पद्यमय इतिहास)

दोहा—वीर ! वीर !! महावीर को !!! करत नमन शतवार ।
सूरीश्वर गुरु रत्न ने, किया बड़ा उपकार ॥ १ ॥
ऐतिहासिक नगरी[1] जहाँ, उपजे हैं ओसवाल ।
सब लोगों के ज्ञान हित, कहदूँ थोड़ा हाल ॥ २ ॥

(तर्ज़—कव्वाली)

कथन इसका सुनो अब सब । ओशियाँ क्यों बसाई है ॥टेर॥
नगर श्रीमाल का राजा । वंश परमार में जो था ।
हुई पुत्रों से इक कारण । किसी दिन को रुखाई है ॥क०१॥
पुत्र[2] इक तातको तजके । इकट्ठा करके निज धन को ।
चला फिर अन्य स्थानों को । वसन की धुन समाई है ॥क०२॥

१ उपकेशपुर (ओशियाँ) २ उत्पलदेव कुँवर ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सुना एक नग्र[1] का राजा[2]। मिले है भेट को लेकर।
बनाने काम खुद अपना । यही युक्ती चलाई है ॥क०३॥
खरीदे अश्व जो पचपन्न[3]। रुपैये लक्ष दे दे कर ।
नृपति को भेट करने की। उपलदे ने विचारी है ॥क०४॥

दोहा—नित प्रति घोटक भेट दे, मिलना कभी न होय।
पचपन दिन यों ही रहा, पचपन घोड़े खोय ॥

(तर्ज़—ना छेड़ो गाली दूँगा रे ।)

अब अवसर ऐसा आया रे। तब भेंट हुई तत्काल ॥ टेर ॥
राजा ने करी सवारी । घोड़ों की पंक्ति श्रृँगारी।
खुश होगया शीघ्र निहारी रे। फिर पूछा यही सवाल ॥अ०१॥
ये घोड़े कहाँ से आये । जो सबको बहुत सुहाये।
मंत्रि मन में पछताया रे। पर बोल दिया सब हाल ॥अ०२॥
है एक विदेशी आया । वह घोड़े इतने लाया।
नित भेंट एक है आया रे । सबकी है सुन्दर चाल ॥अ०३॥
राजा ने उसे बुलाया । आदर से पास बिठाया।
वरदान दिया मन भाया रे। तुम माँग लेहु इस काल ॥अ०४॥

दोहा—घोड़े पैं मैं बैठ कर, जाऊँ जितना आज।
लीद जहाँ वह कर देवे, उतना पाऊँ राज ॥ १ ॥

---

१ ढेलीपुर (दिल्ली) २ श्रीसाधुराज। ३ किसी किसी पट्टावलियों में अश्व १८० भी लिखा मिलता है ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

(तर्ज़—दिल जान से फिदा हूँ।)

मन चाहा राज पाया। इस भाँति अश्व चढ़के ॥टेर॥
देवी चामुण्डा[1] ने आकर। उसको कहा बुझाकर।
निकलूँ मैं पहाड़ अन्दर। उस रोज़ शीघ्र तड़के ॥मन०१
मन्दिर मेरा बनाना। अहीर को जताना।
भय से न डिगमिगाना। जब गायें वहाँ से भिड़के॥मन०२
इतना है काम तेरा। नगरी बसाना मेरा।
नगरी में हो उजेरा। औरों से चढ़ के बढ़ के ॥मन०३
ऊँपलदे शीघ्र आया। आ ग्वाल को जताया।
मत शोर नेक करना। जब पहाड़ आके फड़के ॥मन०४

दोहा—उसने हाँमी तो भरी, अन्त गया वह भूल।
पहाड़ फटा वह डर गया, काम हुआ प्रतिकूल ॥१॥

(तर्ज़—अपने मौला की मैं जोगन बनूँगी।)

हाँक मची है जब हाँक मची है, देवी निकलते हाँक मची है॥टेर॥
आधी निकल कर देवी तो रह गई
नगरी सु उपकेश पट्टन बसी है ॥हाँ०१॥
ऊँपलदेव हुआ राजा वहाँ का
ऊहड़ मंत्रि की प्रीति बनी है ॥हाँ०२॥

---

१ चामुण्डा का ऐसा अधिकार जैन पट्टावलियों में नहीं है पर कितनेक वही भाटों की वंशावलियों में मिलता है।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सहस्र अष्टादश निज कुटुम्बी
और भी परजा हुई घनी है ॥ हाँ०३॥
तीन लक्ष चौरासी[1] हज़ार सब
क्षत्रिय बस्ती शौर्य्य सनी है ॥ हाँ०४॥

दोहा—शोभा से संयुक्त वह, नगरी बनी विशाल ।
धन धान्य व्यापार से, सब जन थे खुशहाल ॥ १ ॥

(तर्ज—मोरा दे मैया प्यारा लगे तोरा जैया)

अचल गढ़ ऊपर रत्न प्रभु थे पधारे । अचल० ॥ टेर ॥
चौदह पूर्व के धारी सूरीश्वर । श्रुत केवली अनगार ।
लब्धि संपन्न आगम विहारी । गुण से भरे भंडार जी ॥अ०२॥
विहार करते आप पधारे । शिष्य पाँच सौ साथ ।
मास खमण से करे पारणा । चमत्कार था हाथ जी ॥अ०३॥
अचलगढ़ की नामी देवी । चक्रेश्वरी था नाम ।
कठिन तपस्या देख गुरू की । करे भक्ति गुण गान जी ॥अ०४॥
गुर्जर प्रान्त विचरने कारण । गुरु ने किया विचार ।
मरुभूमि में जाने से हो । देवी कह उपकार जी ॥अ०५॥

दोहा—उपयोग दे गुरु लख लिया, जान लिया सब सार ।
मारवाड़ में दया धर्म का, होवेगा विस्तार ॥१॥

---

१ पांच लक्ष घरोंमें, क्षत्रिय वर्ण के ३८४००० घर माने जाते थे ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

(तर्ज़ – ढूँढ लिया जग सारा जग सारा० ।)

उपकेश[1] में पगधारा–पगधारा सूरीश्वर[2] शिष्य[3] साथ ले ॥टेर॥
बाहिर नगर के ध्यान लगाया। मास खामण तप है गुरु ठाया।
करते थे आत्म सुधारा–सुधारा ॥ सूरी० ॥१॥
नगर में शिष्य गोचरी जावे। शुद्ध आहार निज योग न पावे।
घूम फिरा पुर सारा–पुर सारा ॥ सूरी० ॥२॥
मिथ्या दृष्टि लोग हैं वहाँ के। शिष्य कहे गुरु चलो यहाँ से।
मिलत न योग्य आहारा–आहारा ॥ सूरी० ॥३॥
मास खामण तप पूरा करके। चलन लगे गुरु 'धीरज' धरके।
देवी ने आय पुकारा–पुकारा ॥ सूरी० ॥४॥

दोहा—चमत्कार दिखलाइये। सुधरे यहाँ के लोग।
गुरू कहे करतब नहीं। मुनि लोगों के योग ॥१॥

(तर्ज़ वनजारा की)

देवी कह बात बुझाई। धर ध्यान सुनो मुनिराई ॥टेर॥
जहाँ लाभ धर्म का होवे। उपयोग देख कर जोवे जी॥
यह चलती रूढ़ी आई। धर ध्यान सुनो० ॥ १ ॥
तब गुरु ने ध्यान लगाया। सब कथन सच्च ही पाया जी॥
रख दिया नाम सच्चाई। धर ध्यान सुनो ॥ २ ॥

---

१ उपकेशपुर २ रत्नप्रभसूरी ३ पांच सो मुनियों के साथ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

राजा का इधर जँवाई। सह पत्नि महल में जाई जी ॥
सोता मन हर्ष मनाई। धर ध्यान सुनो ॥ ३ ॥
ऊहड़ मंत्री का लाला। त्रिलोकसिंह गुणवाला जी ॥
डसा पूणिया नाग उसे जाई। धरो ध्यान० ॥ ४ ॥

दोहा—भई राज्य में खलबली, लुप्त भया डस नाग।
ऊपलदे रोने लगा, छाया शोक अथाग ॥ १ ॥

(तर्ज—हाला वेगा आवोरे)

मंत्रवादी लावोरे। कुँवर बचावोरे
मुँह माँगा मैं दे दूँगा हो जी ॥ टेर ॥
लावो जल्दी—देर न करिये लगार।
जावो जल्दी—ढूँढ़िये नगर मझार ॥ मं० १ ॥
सब वैद्य बुलाये—औषध दिया था लगाय।
पर कैसे होवे—चलता नहीं रे उपाय ॥ मं० २ ॥
मंत्रवादी—आकर मंत्र चलाय।
तंत्रवादी—मिल कर तंत्र बनाय ॥ मं० ३ ॥
सब हार गये—तनिक न विष को घटाय।
सब ले शव चले—आये जहाँ स्मशान ॥ मं०४ ॥

दोहा—देवी लघु साधु बनी, कहा एक को जाय।
कुँवर तुम्हारा जो रहा, देते व्यर्थ जलाय ॥ १ ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

(तर्ज़ पीलू)

जाय कहा तब भूपके आगे। कुँवर को साधु जीवित बतावे ॥टेर॥
भूपकहे उसको यहाँ लाओ। सच्ची सच्ची बात जतावे ॥ १ ॥
बात करी देवी अदृश्य होगई। लोग उसे ढूँढ़न को जावे ॥ २ ॥
साधु को जाकर नहिं पाया। देखत देखत भेद न पावे ॥ ३ ॥
लुणाद्रि गिरि पर वह ठहरे। शीघ्र वहाँ जा काम बनावे ॥ ४ ॥

दोहा—भूप मंत्रि परजा सहित, ले अर्थी को साथ।
जाय गुरू चरणों पड़े, कही कुँवर की बात ॥ १ ॥

(तर्ज़—झूलावें माई वीर कुँवर पालने)

यह कुँवर जिलावो करो बड़ा उपकार है ॥ टेर ॥
गुरु पै आया कुँवर जिलाया। हुवा हर्ष अपार है ॥ य० १ ॥
मुकट चरण में रख कर बोला। लीजिये सभी अधिकार है ॥य० २ ॥
गरजवंत अरु दरदवंत को। नहीं कुछ भी इन्कार है ॥ य० ३ ॥
गुरु[1] कहे हम निज ने त्यागा। राज्य नहीं दरकार है ॥ य० ४ ॥

दोहा—धर्म लाभ दे गुरु कहे। सभी धर्म का सार।
समकित शुद्ध स्वीकारिये। होवे आत्म सुधार ॥ १ ॥

(१)—रत्नप्रभसूरि विद्याधरों के राजा थे। उन्होंने वैताढ्य का राज त्याग के दीक्षा ली थी।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

(तर्ज—वारी जाऊँरे सांवरिया तो पै वारणा रे)

लेवो धार सदा उपकार के हिंसा टारना रे ॥ टेर ॥
परम धर्म स्वीकार करो अब, मिथ्या भाषण दूर करो सब ।
त्याग चोरी व्यभिचार । लोभ को टालना रे ॥ १ ॥
राजा मंत्री सब मिल जनता । उपदेश गुरू का सिर पर धरता ॥
वासक्षेप शिर डार । जैन पथ चालना रे ॥ २ ॥
उपकेश पट्टन से कहलाये । उपकेश वंश सब के मन भाये ॥
गौत्र मुख्य अढार[1] साख बहु जानना रे ॥ ३ ॥
हर्ष वधाई हो गई घर घर । किरपा हुई गुरु की हम पर ॥
सत बतलाया मार्ग, उसी पै चालना रे ॥ ४ ॥
संवत् विक्रम चारसौ पहले, ओशियों वासी क्षत्रिय सघले ॥
फिर ओसवाल[2] कहलाये, जैनी जानना रे ॥ ५ ॥
दोहा—पार्श्व पाट छट्ठे हुए, रत्नप्रभु सूरि राय ।
(७०) सत्तर संवत् वीर का, निर्णय समय सुपाय ॥ १ ॥

---

(१) १—तातेड़ २—बाफणा ३—करणावट ४—बलाहा (रांका) ५—मोरख (पुष्करणा) ६—कुलहट ७—विरहट (भटेवरा) ८—श्रीश्रीमाल ९—श्रेष्ठि (वैद्यमुत्ता) १०—संचेती ११—आदित्य नाग (चोरडिया) १२—भूरि (भूरंट) १३—भद्र (समदड़िया) १४—चिंचट (देशरड़ा) १५—कुम्भट १६—डिडू (कोचर मुत्ता) १७—कनौजिया १८—लघु श्रेष्ठि। इनकी ४९८ जातियों का तो पता मिल चुका है

(२) यह नाम विक्रम की ग्यारवीं शताब्दि में हुआ है ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

(तर्ज—खूने जिगर को पीता हूँ)

अब[1] मन्दिर यहाँ बनावेंरे। लोगों ने किया विचार॥ टेर॥
जो दिन में लोग बनावें। वह रात पड़े गिर जावे॥
तब रत्न प्रभो को जतावें रे। दीजे यह विघ्न निवार॥ १॥
महावीर थापें दुःख जावे। कहें लोग कहां से लावें॥
मूर्ति एक देवी बनावे रे। कुछ दिन में हो तैयार॥ २॥
अब मूर्ति कैसे बनावें। जिसका भी हाल सुनावें॥
गो पय संग रेती मिलावे रे। वैज्ञानिक कारोबार॥ ३॥
गुरू पै देवी आवे। कर विनती वचन सुनावे॥
सुन्दर अंग बन नहीं पावै रे। जब तक लौं 'धीरज' धार॥४॥
नहीं दूध मंत्रि ने पाया। ग्वाले को था धमकाया॥
कर खोज[2] भेद बतलाया रे। वर घोड़ा किया तयार॥५॥

(१) उकेशपुर में ऊहड़ मंत्रि नारायण का मन्दिर पहिले ही से बन रहा था।२ ऊहड मंत्री की एक गाय थी जो अमृत सदृश दूध की देने वालीथी। वह जंगल में एक केर के झाड़ के पास जाती थी उसका दूध स्वयं भर जाता था। वह देवी दूध और रेती से महावीर की मूर्ति बना रही थी। दूध कम होने के कारण ग्वाले ने खोज की तो ज्ञात हुआ कि वहाँ देवी मूर्ति बना रही है। फिर तो देरी ही क्या थी? वरघोड़ा की तैययारी कर सूरीजी को साथ लेकर वे गये। जमीन से मूर्ति निकाल हस्ती पर आरूढ़ कर रत्न माणिक मुक्ताफल से बाँध कर के

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

दोहा—उत्कंठा अतिही बढ़ी। सके न 'धीरज' धार।
उसी रोज़ महि खोद के। मूर्ति लई निकार ॥१॥

(तर्ज़—तेरा मौला मदीने बुलाले तुझे)

परतिष्ठा सूरी से तत्काल हुई ॥ टेर ॥
देह दो कर एक दिन में। कोरटा अरु ओशियों ॥
दोनों जगह में एक सी। स्थापित हुई हैं मूर्तियों ॥
जग में इस कारण ख्याति भई ॥ प० १ ॥
दिन-ब-दिन उपकेशपुर की। उन्नति होती रही ॥
धन धान्य विद्या धर्म से थी। पूर्ण जग में हो रही ॥
जहाँ तहाँ पै इन की है बढ़ती हुई ॥ प० २ ॥
शोभा अति सुन्दर बनी। मुख से कही ना जायजी ॥
जैसे जन वहाँ पर रहे थे। भोग वैसा पायजी ॥
सब जैनों की जाहोज़लाली रही ॥ प० ३ ॥
बहुत[1] वर्षों तक वहाँ हालत सदा वैसी रही।
मिथ्यात्व सब ही छूट कर वहाँ जैनों की बस्ती रही ॥
पूरण मन्दिर जी की सँभाल रही ॥ प० ४ ॥

नगर में लाये पर कुछ जल्दी करने से मूर्ति के हृदय पर दो गाँठें रह गई। मार्गशीर्ष शुक्ला ५ को ओशियों व कोरटा में सूरीजी ने वैक्रय से दो रूप बना कर एक साथ प्रतिष्ठा कराई। वे दोनों मूर्तियाँ आज भी विद्यमान हैं।

१ मूल प्रतिष्ठा से ३०३ वर्ष तक तो उपकेशपुर की बहुत बढ़ती रही। यह वर्णन बाद का है।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat   www.umaragyanbhandar.com

दोहा—जिस दिन जल्दी खोद भू, मूरति लई निकाल।
देखन में कुछ दीर्घ स्तन, रह गये थे उस काल॥ १॥

(तर्ज़—वंशी वाले की।)

सब जन मन धर के भक्ति पूरण। प्रेमभाव से रहते हैं॥ टेर॥
वीर जिनेश्वर की पूजा करने को। निशि दिन जाते हैं।
वे देख देख कर उन्हीं स्तनों को। मन ही मन मुरझाते हैं॥१॥
नवयुवक कहे वृद्ध लोगों से। दिखते हैं स्तन ये मिटवादो।
तो वृद्ध कहें नहीं कार्य करो यह। विघ्न उपस्थित आय हुए॥२॥
रत्न प्रभो ने करी प्रतिष्ठा। देवी ने मण्डान किया॥
सर्वार्थसिद्धि शुभ मुहूर्त में। मूर्ती को स्थापित लाय किया॥३॥
एक दिन पुरके सब वृद्ध गये। जब न्यातिजाति के कारज हित।
पीछे से मिल नवयुवकों ने। वह कार्य किया पहिले जो चित्त॥४॥

दोहा—खाती को बुलवायके, टाँकी दई लगाय।
रक्त धार बहने लगी, देखत सभी पलाय॥ १॥

(तर्ज़—लख्या जे लेख ललाटारे।)

खलबली हो रही रे संघ श्री। उपकेश पट्टन माँय॥ टेर॥
संघ सकल मिल आय केरे। मनमें करे विचार।
जाय कहो मुनिराज कोरे। दीजे विघ्न निवार॥ख०१॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मुनि कहे आबू[1] गिरि पर, कक्कसूरि पै जाय।
बात कहो जैसी बनी रे, विघ्न मिटावे आय ॥ख०२॥
करी सवारी साँड़ की रे। गये सूरि के पास।
शीघ्र पधारो कार्य सुधारो। रही आप पर आश ॥ख०३॥
महा प्रभाविक पर उपकारी। घट घट जानन हार।
बात सुनि गुरु लब्धि से। वहाँ हाज़र रहैं तय्यार ॥ख०४॥

दोहा—पूजा शान्ति स्नात्र की, कक्क सूरीश्वर आय।
वर्ष तीन सौ तीन में, दीया विघ्न मिटाय ॥ १ ॥

(तर्ज़—ग़ज़ल)

बहुत वर्षों बाद में, हालत बदलती ही रही।
छोड़ कर जाते रहे, कुछ जैन की वस्ती रही॥
ध्यान आया ओसवालों को, स्वयं मन्दिर तरफ़।
प्रबन्ध पूरा कर दिया, मिलता रहे ख़र्चा सिरफ़॥
"धोरज" को जो जो ज्ञात था, वैसा यहाँ पर लिख दिया।
शायद कमी हो रह गई तो, पूर्ण करना पंक्तियाँ॥
वेद सिद्धि निधि इन्दू वर्ष, श्रेष्ठ यह मधु मास है।
कृष्ण पख में तीज को, शुभवार यह कवि वार है॥

दोहा—बच्छावत सेवा सदन। शहर सादड़ी माँह।
उसी स्थान पर है लिखा। पढ़ो सज्जन चित लाहि ॥१॥

---

1 कुछ पट्टावलियों में माण्डव्यपुर भी लिखा मिलता है।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

जैन धर्म की महत्ता

(तर्ज़—फरमा दिया कमली वाले ने।)

सब धर्मों में यह आला है आला है जैन निराला है।
सब चुन चुन कर नर लेय रहे तत्त्वों का यही मसाला है ॥टेर॥
ऐसे हैं जिनवर देव जिन्हें नहिं पक्षपात से चारा है।
आठों करमों को दूर किया शिवपुर में घर कर डाला है ॥१॥
गुरु जैनी हैं सतवादी ये नहीं पाप पथिक या रागी हैं।
कञ्चन कामिनी को त्याग सदा महा पाँच व्रतों को पाला है॥२॥
नहीं दुर्गति में गिरने देवे सद् रस्ता धर्म बताता है।
सम्यक् दर्शन और ज्ञान क्रिया से 'धीरज' जैन उजाला है ॥३॥

पूजो रत्न सूरी महाराज मोक्ष की राह बताने वाले।
थे नगर ओशियों आप सब को जैनी आप बनाये।
जिन्हों का वंश ओसथपाए गोत्र अठारह बनाने वाले ॥पू २
जग तारण तरण गुरुराज सुधारो भक्तों के सब काज।
शरण में आयों की रख लाज दुःख सब दूर हटाने वाले ॥पू २
तुम ही हो दीन दयाल करिये सेवक की प्रतिपाल।
मिटादो कर्मों के जंजाल "ज्ञान" को अमर बनाने वाले ॥पू ३

* इति श्री ओसवाल जातिय संक्षिप्त पद्यमय इतिहास समाप्तम् *

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

आदर्श वीरपुत्र।

(सङ्कलन कर्ता—श्रीनाथ मोदी "जैन" जोधपुर।)

देख कर जो विघ्न बाधाओं को घबराते नहीं।
भाग पर रह करके जो पीछे हैं पछताते नहीं।
काम कितना ही कठिन हो पर जो उकताते नहीं।
भीड़ पड़ने पर भी जो चञ्चल हैं दिखलाते नहीं ॥१॥

आज जो करना है कर देते हैं उसको आज ही।
सोचते कहते हैं जो कुछ कर दिखाते हैं वही।
मानते जी की हैं सुनते हैं सदा सबकी कही।
जो मदद करते हैं अपनी इस जगत में आपही ॥२॥

भूल कर वे दूसरे का मुँह कभी तकते नहीं।
कौन ऐसा काम है वे कर जिसे सकते नहीं।
आज कल करते हुए जो दिन गँवाते हैं नहीं।
यत्न करने में कभी जो जी चुराते हैं नहीं ॥३॥

चिल चिलाती धूप को जो चाँदनी देवें बना।
काम पड़ने पर करें जो शेर का भी सामना।
हँसते हँसते जो चबा लेते हैं लोहे का चना।
"है कठिन कुछ भी नहीं" जिनके है जी में यह ठना ॥४

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

होते हैं एक आन में उनके बुरे दिन भी भले।
सब जगह सब काम में रहते हैं वे फूले फले।
बात है वह कौन होती जो नहीं उनके किये।
वे नमूना आप बन जाते हैं औरों के लिये ॥५॥

कोस कितने भी चलें पर वे कभी थकते नहीं।
कौनसी है गाँठ जिसको खोल सकते वे नहीं।
काम को आरम्भ करके छोड़ते हैं वे नहीं।
सामना कर भूल करके मोड़ते मुख वे नहीं ॥६॥

ठीकरी को वे बना देते हैं सोने की डली।
रंग को करके दिखा देते हैं वे सुन्दर खली।
वे बबूलों में लगा देते हैं चम्पे की कली।
काक को भी वे सिखा देते हैं कोकिल काकली ॥७॥

ऊसरों में हैं खिला देते अनूठे वे कमल।
वे लगा देते हैं उकठे काठ में भी फूल फल।
बन गया हीरा उन्हीं के हाथ से है कारबन।
काँच को करके दिखा देते हैं वे उज्ज्वल रतन ॥८॥

पर्वतों को काट कर सड़कें बना देते हैं वे।
सैकड़ों मरुभूमि में नदियाँ बहा देते हैं वे।
अगम जलनिधि गर्भ में बेड़ा चला देते हैं वे।
जङ्गलों में भो महा मङ्गल रचा देते हैं वे ॥९॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

कार्य थल को वे कभी नहिं पूछते वह है कहाँ।
कर दिखाते हैं असम्भव को वही सम्भव यहाँ।
उलझनें आकर उन्हें पड़ती हैं जितनी ही जहाँ।
वे दिखाते हैं नया उत्साह उतना ही वहाँ॥१०॥

जो रुकावट डाल कर होवे कोई पर्वत खड़ा।
तो उसे देते हैं अपनी युक्तियों से वे उड़ा।
बीच में पड़ कर जलधि जो काम देवे गड़बड़ा।
तो बना देंगे उसे वे क्षुद्र पानी का घड़ा॥११॥

सब तरह से आज जितने देश हैं फूले फले।
बुद्धि विद्या धन विभव के हैं जहाँ डेरे डले।
वे बनाने से उन्हीं के बन गये इतने भले।
वे सभी हैं हाथ से ऐसे सपूतों से पले॥१२॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com